महामत कहे ऐ मोमिनों, सुनियो मंगलाचरन ।
अपनी बीतक देखियो, सुनियों दोए श्रवन ॥६८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दरसाथ जी ! ये तुम्हारी ही बीतक, परमधाम से खेल देखने के लिए आने से लेकर वापस परमधाम जाने तक का सार, मंगलाचरण कहा है । इसको वजूद और आत्मा के कानों से सुनिए और विचार कीजिए ।

(प्रकरण ६२, चौपाई ३६४२)

अष्ट पोहोर की सेवा

(जो श्री बंगला जी में विराजे श्री प्राणनाथ जी की मोमिनों ने की)

पहला पहर

सुन्दर सेज सरूप की, अति प्यारी भरी नूर ।
तिनकी सिफत इन जुबां, क्यों कर कहों जहूर ॥१॥

श्री बंगला जी में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के सुंदर स्वरूप की सेज्या, जो मोमिनों की नूरमयी दृष्टि तथा प्यार से भरी है, शोभायमान है । उसकी महिमा इस झूटी जुबां से वर्णन नहीं की जा सकती।

अत प्यारा लाल पलंग, पचरंगी पाटी मिहीं भर ।
प्रेम प्रीत सों सेवहीं, सिरदार साथ सुन्दर ॥२॥

अत्यन्त प्रिय दर्शनीय लाल पलंग है, जो पांच रंग की पतली निवार से बुना हुआ है । श्री प्राणनाथ जी की सेवा सिरदार साथी बड़े प्रेम के साथ स्नेहपूर्वक करते हैं ।

सेज तलाई कोमल, मिहीं चादर धरी नरम ।
सिराने गाल मसुरीए, ए जाने सैंया दिल मरम ॥३॥

पलंग पर नरम तलाई-गद्दा बिछा है । उस पर पतली रेशमी नर्म चादर बिछी है और सिराहने की तरफ गाल मसूरिये-गोल तकिये शोभायमान हो रहे हैं । इस सेज्या को सजाने का ढंग, मर्म, जिन मोमिनों के दिल में अपने धनी का इश्क-प्यार भरा है, वो ही जानते हैं ।

चारों पाए सेज बन्ध, बांधे सनंध कर अत ।
लटके फुमक रेसमी, पचरंग तरंग झलकत ॥४॥

चादर को सलवट से बचाने के लिए चारों कोने पलंग के पायों के साथ सेजबंध से बांध दिए गए हैं। चादर के किनारों में रेशम के फुंदने लटक रहे हैं । उन्हें देखने से उनमें पांच रंगों की झलक, किरणों के समान दिखाई देती है ।

Nijanand App

चादर रजाई ओढ़ने, रूत समें सेवा होए ।
लाल डांडे चार नूर के, क्यों कहों छत्री सोए ॥५॥

धाम के धनी श्री जी के ओढ़ने के लिए ऋतु के अनुसार चादर और रजाई की व्यवस्था होती है । चार पायों पर लाल रंग के चमकते हुए चार डांडे लगे हैं । उन डांडों पर छत्री, चन्द्रवा शोभायमान हैं जिसकी शोभा वर्णन से बाहर है ।

परदे झालर झलकत, लवाजमें नाहीं सुमार ।
सेवे प्रेमदास जोस में, द्वारका दास खबरदार ॥६॥

पर्दे और झालरें सब चमक रहे हैं । इस सेज के सामान की शोभा का वर्णन अपरम्पार है । प्रेमदास और द्वारिका दास सतर्क होकर बड़ी उमंग से श्री जी की सेज बिछाने की सेवा करते हैं ।

पलंग उठाए बिछावत, नाराएन हर नन्दन ।
कोई दिन नाथे करी, करते थे रात दिन ॥७॥

स्वामी जी के पलंग को उठाने और बिछाने की सेवा का कार्य नारायण भाई एवं हरनंदन भाई ने किया। कुछ दिन इस सेवा को नाथा जोशी ने भी किया । इस प्रकार से सेवा दिन-रात होती रहती थी ।

फेर के चित दे करी, मथुरा गंगादास ।
परमानन्द भी संग रहे, सेवे धाम धनी लिए आस ॥८॥

बाद में पलंग उठाने और बिछाने की सेवा बड़ा ध्यान लगा कर मथुरा भाई और गंगादास ने की । इनके साथ परमानंद भाई भी शामिल रहते थे । श्री प्राणनाथ जी को सभी सुन्दरसाथ साक्षात् धाम का धनी मान कर सेवा करते थे ।

स्याम जी सामिल रहे, सेज सेवा के संग ।
ए चारों चित सों करें, जान धाम धनी अरधंग ॥९॥

सेज सेवा में श्याम जी भाई शामिल रहते थे । इस प्रकार से चारों साथी श्री प्राणनाथ जी को ही अपने धाम के धनी मानकर अंगना भाव से सेवा करते थे ।

मानिक सेवे सनेह सों, सब सेवा में खबरदार ।
हजूर हाजिर रात दिन, सब सेवा में सिरदार ॥१०॥

माणिक भाई बड़े प्रेम स्नेह से श्री जी की सभी प्रकार की सेवा करने के लिए हर समय हाजिर रहते थे । स्वामी जी के अति निकट रहकर हर सेवा में सबसे आगे रहते थे ।

Nijanand App

छबीला जो सेवा करे, जो पहिले करी जमुना ।
ए वारसी इनको दई, जान बेटा अपना ॥११॥

छबील दास जी ने जो जल पिलाने की सेवा की, वह पहले जमुना बाई करती थी । उन्होंने इस सेवा के कार्य का अधिकार अपना बेटा समझ कर छबीलदास को दिया ।

जल अरूगावें छबीलदास, पीछली रात रहे घड़ी दोए ।
उठे पीउ पलंग से, आरोगत हैं सोए ॥१२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी जब पिछली रात दों घड़ी रह जाती थी तो पलंग से उठ कर जल आरोगते थे । उस समय जल आरोगाने की सेवा छबीलदास जी की थी ।

पूरबाई को राज नें, रीझ के सेवा दई एह ।
पीछली रात को अरूगावने, ल्यावे लोटा जल के ॥१३॥

आप श्री जी ने इस समय के जल की सेवा पूरबाई पर रीझ कर दी थी तो पूरबाई इस समय जल आरोगाने के लिए जल का लोटा भर कर लाती थी ।

पाव दाबन प्रात को, आवे अगरदास गुलजी ।
कबहूं कबहूं माव जी, दावने की सेवा करी ॥१४॥

प्रातः चरण कमल दबाने की सेवा के लिए अगरदास और गुलजी खां आते थे । मावजी भाई कभी-कभी इस सेवा के लिए आते हैं ।

और सेवा में आवत, रामबाई दाबत ।
कोई दिन खेमदास, पीछे रात जादी आवत ॥१५॥

और चरण कमल दबाने की सेवा में रामबाई आती थी । कुछ दिन खेमदास ने ये सेवा की । पिछली रात की इस सेवा में जादी बाई आती हैं ।

उठत पीउ पलंग से, बखत अरूण उदे ।
सब हजूरी हाजिर रहें, सो सेवा करें ऐ ॥१६॥

आप प्राणों के नाथ स्वामी जी अरूण उदय के समय पलंग पर से उठते हैं और उस समय सब सेवा करने वाले सुंदरसाथ इस सेवा में हाजिर रहते हैं ।

अंगीठी इन समें, ल्यावें बिहारी दास ।
तपावें श्री राज को इन समें, ए सेवा है खास ॥१७॥

सर्दी की ऋतु में बिहारी दास कोयले की अंगीठी भर के ले आते हैं । इस समय श्री राजजी महाराज उठकर अंगीठी तापते हैं । ये खास सेवा बिहारी दास जी की होती है ।

Nijanand App

रूमाल रतन बाई का, भिजाइ ताते जल ।
श्री राज नेत्र पोंछत, ए सेवें दिल निरमल ॥१८॥

इस समय बड़े साफ दिल से रतनबाई गर्म जल में भिगोकर रूमाल देती हैं जिससे आप श्री जी नेत्र पोंछते हैं ।

धनजी और तारा बाई, कन्नड और गंगाराम ।
धाम धनी तीजी भोम से, प्रात उठे इन ठाम ॥१९॥

धन जी, तारा बाई, कन्नड़ भाई और गंगाराम इस समय जब आप धाम के धनी परमधाम में पाँचवी भोम से उठ कर प्रातः तीसरी भोम में आते हैं तो, तीसरी भोम की पड़साल की वाणी गाते हैं ।

ए नित गावत हैं, और साथी गावे कोई कोई ।
रिझावत हैं श्री राज को, बानी गावत सोई ॥२०॥

ये सब मिलकर तीसरी भोम की पड़साल की वाणी हर रोज गाकर श्री जी को रिझाते हैं । इसमें और भी कोई कोई साथी आके शामिल होते हैं ।

पहिले प्रेम दास करी, भी रामचन्द नन्द राम ।
आखर को वल्लभ करी, बस्तर पहिनाए के काम ॥२१॥

प्रातः जब श्री जी पलंग से उठते हैं तो वस्त्र पहनाने की सेवा प्रेमदास, रामचन्द और नन्द राम भाई करते थे । आखिर को फिर ये सेवा वल्लभ भाई करते हैं ।

बिहारी दास सेवा करी, ले आवें अंगीठी भर ।
रात प्रात तपावत, बस्तर ताजे अंग पर ॥२२॥

बिहारीदास सर्दी ऋतु के कारण वस्त्रों को गर्म करके पहनाने के लिए रात और प्रातः अंगीठी भरकर लाते हैं ।

पहिले चरना पेहेर के, फेर गोटा कन ढपी ।
चित दे चोंपसो सेवहीं, पहिनत हैं साहिब जी ॥२३॥

धाम धनी श्री प्राणनाथ जी पहले सिर पर रेशमी वस्त्र की पट्टी बांधते हैं और फिर गोटा तथा कनढपी पहनते हैं । श्री जी साहिब को कनढपी आदि पहनाने की सेवा सुंदरसाथ बड़े भाव से करते हैं ।

पहिले मोजे पहिनावत, प्रेमदास चित ल्याए ।
पीछे वल्लभ दास ने, सेवा करी बनाए ॥२४॥

चरण कमलों में पहले मोजे प्रेमदास बड़े प्रेम पूर्वक पहनाते हैं । फिर ये सेवा वल्लभदास जी रूचि से करने लगे ।

Nijanand App

कबहूं पहिनें कुरती, जरी बूटे के संग ।
पटुका जरी जड़ाव जो, दो थुरमे सुपेत रंग ॥२५॥

कभी कभी श्री जी कसीदे से कढ़ी बेल-बूटेदार कुर्ती पहनते हैं और कमर में नीले पीले रंग का पटुका पहनते हैं जो जरी से निकला है और उसके दोनों किनारे (छेड़े) सफेद रंग के हैं ।

प्रेमदास बस्तर में, पहिनावत हैं सिनगार ।
नन्दराम सामिल रहे, संग लाल कस बांधनहार ॥२६॥

श्री जी के वस्त्रों के श्रृंगार की सेवा में प्रेमदास जी रहते हैं और नंदराम जी भी शामिल रहते हैं और लालदास जी कुर्ती के कस बांधने की सेवा करते हैं ।

लालबाई कस बांधत, मकरन्द दास रहे भेले ।
लाल दास के बदले, सेवा में रहे ए ॥२७॥

लालदास जी के बदले कस बांधने की सेवा लालबाई करती हैं और मकरन्द भाई भी उनके साथ रहते हैं ।

जब पहुंचे इत महाराज, पहिनावत सिनगार ।
सेवा करे सनेह सों, जान के धनी निरधार ॥२८॥

जब प्रातः के समय महाराजा छत्रसाल जी पहुंच जाते हैं तो अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी को सिनगार पहनाने की सेवा बड़े स्नेह के साथ करते हैं ।

बल्लभ जीवी प्रेमबाई, बांधे चन्द्रवा सेतखान ।
ए सेवा नित करें, एही लई इनों मान ॥२९॥

वल्लभ, जीवी, प्रेमबाई यह तीनों सेतखान, (देहक्रिया के स्थान) पर चन्द्रवा बांधते है । इस सेवा को यह तीनों अपनी सेवा मानकर ही करते हैं ।

प्रात समें पधारत, हरबंस के घर ।
पावड़े बिछावत प्रेम सों, लाल बाई सेवा पर ॥३०॥

प्रातः के समय देह क्रिया के लिए जब हरवंश के घर में जाते हैं तो चरण कमलों में लालबाई बड़े प्रेम के साथ पांवड़ा बिछाने की सेवा करती है ।

Nijanand App

सेतखानों घन स्याम को, था हरबंस के पास ।
फेर अपने ढिग किया, ए सेवा करी इनों खास ॥३१॥

देह-क्रिया का स्थान पहले हरवंश राय के घर था, बाद में इस सेवा का स्थान घनश्याम दास ने अपने घर के पास बना दिया ।

चरन दासी पनहीं, पहिले रखी दास नारायन ।
कोई दिन मोहन रखी, फेर लई खिमाई जान ॥३२॥

चरण कमलों में खड़ाऊं पहनाने की सेवा नारायण दास ने की । कुछ दिन मोहन दास ने ये सेवा की। फिर खिमाई भाई ने ले ली ।

फेर श्री राजें रीझ के, दई वल्लभ दास ।
कोईक दिन खिमाई सामिल, फेर आई वल्लभ पास ॥३३॥

इस सेवा में कुछ दिन खिमाई भाई शामिल रहे । फिर श्री जी ने रीझ कर यह सेवा वल्लभ दास को दे दी और वह ये सेवा करने लगे ।

पांवड़े बिछावत बकाई, और सेवा करे किसनी ।
चलते सैंया बिछावहीं, ए सेवा की निसानी ॥३४॥

पांवड़े बिछाने की सेवा में बकाई और किशनी बाई रहती हैं । जब श्री जी चलते हैं तो इन्होंने यह सेवा बहुत ही प्रेम और उमंग के साथ करके दिखाई ।

लोटा भर के ल्यावहीं, ए जो भाई सिवराम ।
दोनों बखत राखत, ए सेवा के काम ॥३५॥

देह क्रिया के लिए दोनों वक्त जल का लोटा भर के लाने की सेवा शिवराम भाई ने की ।

सेवा डब्बा रूमाल की, लाल बाई धरे ।
बदले लाल बाई के, दयाली जो करे ॥३६॥

हाथ के पोंछाने के लिए रूमाल तथा मुखवास-लवंग, इलायची आदि के रखने के लिए डब्बा रखने की सेवा लालबाई ने की और उसके बदले दयाली ने भी की ।

इत पलास के वृक्ष तले, हरवंस देवकी रहें ।
साथी जो संग आवत, ताकी सेवा जुगतें करें ॥३७॥

पलाश के वृक्ष के तले (नीचे) हरवंश देवकी रहते थे । जो सुन्दर साथ श्री जी के साथ आते थे, उनकी सेवा इन्होंने बड़े भाव से की ।

Nijanand App

करत ताते जल को, बड़े माट भर धरे ।
जल झारी दातोन, साथ आगे धरे ॥३८॥

सुन्दर साथ के आने से पहले गर्म पानी के माट भर-भर के रख देते थे । आने पर गर्म जल का लोटा और दातौन सब के आगे रखते थे ।

कोई दिन सेवा करी, गुल मुहम्मद दौलत ।
नित राज पधारत, साथ सेवा करें इत ॥३९॥

कुछ दिन यह सेवा गुल महम्मद दौलत खाँ ने की । जब श्री जी पधारते थे, सुन्दर साथ की भी सेवा यह करते थे ।

सूरज मुखी लिए खड़ा, हाथ पकड़े बदले ।
सूरज सामी करत हैं, बदले यों सेवे ॥४०॥

श्री जी के मुख पर सूर्य की किरणें सीधी न पड़ें, इसलिए शेख बदल अपने हाथ में सूरजमुखी लेकर खड़े रहने की सेवा करता है और वो सूरज के सामने सूरजमुखी को करता रहता है ।

अमोला प्रभावती, प्रात लिए मोरछल ये ।
करत ऊपर राज के, जोलों केसव न पहुंचे ॥४१॥

जब तक केशव जी नहीं पहुंचते तब तक श्री जी को मोरछल झुलाने की सेवा प्रातः के समय अमोला और प्रभावती करते हैं ।

दोनों बाजू मोरछल, केसव संकर लिए हाथ ।
नन्दराम सामिल रहे, चलत राज के साथ ॥४२॥

जब श्री जी चलते हैं तब दोनों ओर मोरछल झुलाने की सेवा में केशव और शंकर मोरछल हाथ में लेकर खड़े रहते हैं और नंदराम भी इनके साथ रहते हैं ।

छत्र सिर पर फेरत, बल्लभ चले पीछे ।
ए सेवे सनेह सों, खड़ा रहे पकड़ के ॥४३॥

वल्लभ दास हाथ में छत्र लेकर खड़ा रहता है और जब श्री जी चलते हैं तो छत्र सिर पर फेरने की सेवा करते हैं ।

Nijanand App

हरबंस के घर से फिरे, चले पांवड़े पर ।
हंसे हंसावे साथ को, पहुंचावे मानिक गादी पर ॥४४॥

हरवंश भाई के घर से जब वापिस लौटते हैं तो सुंदरसाथ चरण कमलों में पांवड़े बिछाते हैं और श्री जी हंसते हंसाते आकर गादी पर विराजमान होते हैं । गादी पर बिठाने की सेवा माणिक भाई करते हैं।

एक बिछावें धन बाई, एक बिछावें घनस्याम ।
हरबंस के घर से फिरे, तब इने सेवा का ए काम ॥४५॥

एक गादी धनबाई और एक घनश्याम बिछाते हैं । हरबंश भाई के घर से जब आते हैं तो श्री जी के आने से पहले ही गादी बिछाने की सेवा की जाती है ।

हिम्मत जब आइया, बिछावत पांवड़े ।
मांग लिया लालबाई से, सेवा करे नित ए ॥४६॥

लालबाई चरण कमलों में पांवड़े बिछाने की नित्य सेवा करती हैं पर जब हिम्मत खां आते हैं तो इस सेवा को लालबाई से मांगकर पांवड़े बिछाने की सेवा करते हैं ।

हाथ पकड़ बैठावत, धन बाई रामकुंवर ।
जब चरन पखालत, बैठें कुरसी या पलंग पर ॥४७॥

श्री जी कुर्सी या पलंग पर जब बैठते हैं तो दोनों ओर से हाथ पकड़कर बिठाने की सेवा धनबाई और रामकुंवर करते हैं । जब पलंग या कुर्सी पर विराजमान होते हैं तो चरण कमल धुलाए जाते हैं ।

चरण प्रछाल के तखत से, उतर के उतारे वस्तर ।
बैठे चन्दन चौकी पर, मरदन होत फुलेल अतर ॥४८॥

चरण कमल धुलाने के पश्चात् जब उठते हैं तो स्नान कराने के लिए पहने हुए वस्त्र उतारते हैं और चन्दन की चौकी पर विराजते हैं । तब सुगंधित तेल से सुन्दरसाथ मालिश करने की सेवा करते हैं ।

कबहूं बैठे पलंग पर, लवाजमें दन्त धावन ।
ले रूमाल ठाढ़े दोऊ बाजू, नारायन केसव सैयन ॥४९॥

श्री जी आप कभी दातौन कुल्ला करने के लिए पलंग पर विराजमान होते हैं । नारायण और केशव बाई हाथ पोंछाने की सेवा के लिए हाथ में रूमाल लेकर खड़े रहते हैं ।

Nijanand App

छबीला अत छबसों, ल्याया कंचन मढ़्यो दातोन ।
जल ताता सीरा समें, करे सेवा दे मन ॥५०॥

छबील दास जी बड़े प्यार भरे भाव के साथ सोने की खोली (पाईप) में दातौन लगा कर देता है और ऋतु के अनुसार ठंडे - गर्म जल की बड़े भाव के साथ सेवा करता है ।

चिलमची हाथ में, नन्दराम पकड़ बैठत ।
श्री राज हाथ पखालत, संकर बांटत चरणामृत ॥५१॥

इस समय नंदराम चिरमची हाथ में पकड़ कर बैठते हैं । आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी जब हाथ पखालते हैं तो शंकर भाई सबको चरणामृत बांटने की सेवा करते हैं ।

श्री राज अस्नान करके, तिलक चन्दन का समीर मिलाए ।
भाल में आप देए के, कर चितवन साथ को दिखाए ॥५२॥

स्नान करने के बाद श्री जी वस्त्र पहनकर सुगंधित केसर को मिलाकर बने चंदन का तिलक अपने हाथ से मस्तक में लगाकर सुंदरसाथ को परमधाम का चितवन कराते हैं ।

तहां से आए तखत पर, धरे दोऊ कदम ।
साथ खड़ा सेवन को, जान अपनी आतम ॥५३॥

वहां से श्री जी तख्त पर चरण कमल रख के विराजमान हुए । सब सुंदरसाथ अंगना भाव से सेवा के लिए खड़े रहते हैं ।

फुलमा बनावत, भर ल्यावत डब्बी ।
नूर महम्मद सेवत है, गुल महम्मद को दी ॥५४॥

मुख के लिए सुंगधित मसाला-फुलमा तैयार करने और डिब्बी भरकर लाने की सेवा नूर महंमद करते हैं । उन्होंने ये सेवा गुल महंमद को दी ।

रूपा बाई को रीझ के, सेवा दई श्री राज ।
नित हरड़े अरूगावहीं, रहे इन सेवा के काज ॥५५॥

आप श्री प्राणनाथ जी ने नित्य हरड़ें आरोगाने की सेवा रीझ कर रूपा बाई को दी । वो नित्य इसी सेवा में लगी रहती थी ।

Nijanand App

पांखड़ी छबील दास सामिल, सेवत है दिन रात ।
अमल ल्याई अरूगावने, मीठी बातें करें विख्यात ॥५६॥

पांखड़ी और छबीलदास दिन-रात सेवा में हाजिर रहते हैं और वह श्री जी के लिए अमल-कहवा ले आते हैं । श्री जी रूच कर (हंस कर) इनसे मीठी बातें करके इन सुन्दरसाथ को प्रसन्न करते हैं ।

आए मकुन्ददास हाजिर, चीरा बंधावें चौपदे चित ।
कानढपी तिन ऊपर, गोदावरी बांधत ॥५७॥

इस समय मुकुन्ददास धाम धनी को पगड़ी बंधवाने की सेवा में ध्यानपूर्वक हाजिर रहते हैं । पगड़ी के ऊपर कनढपी बंधाने की सेवा गोदावरी बहन करती हैं ।

तुर्रा कलंगी परन की, राखत मकुन्ददास ।
चीरा बंधावने बखत हाजिर करें, लटकत तुर्रा खास ॥५८॥

तुर्रे के ऊपर परों की कलंगी लगाने के लिए मुकुन्द दास जी कलंगी ले कर खड़े हैं । पगड़ी बांधते समय कलंगी लेकर हाजिर खड़े रहते हैं । तुर्रा लटकता हुआ बहुत ही प्यारा लगता है ।

सिर पाग बांधें चतुराई सों, हक पेंच हाथ में ले ।
भाव दिल में लेए के, सुख क्यों कहुं बिध ए ॥५९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी अपने हाथ से पगड़ी बड़े निराले ढंग से बांधते हैं और हर पेच (फेरा) अपने हाथ से बांधते हैं । दिल में बहुत ही प्रेम भाव होता है । उस सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

मकुन्ददास के सामिल, आए मकुन्द दास पहुंचे ।
छेड़ा पकड़ ठाढ़ा रहे, आए सेवा करे ये ॥६०॥

पगड़ी बंधाते समय मुकुन्ददास जी के साथ दूसरे मुकुन्ददास भी शामिल रहते हैं । वह पगड़ी का छेड़ा (पल्ला) पकड़ कर खड़े रहते हैं ।

अगरदास ठाढ़ा रहें, ले हाथ में दरपन ।
सेवा करे समार की, ए सेवे चित दे मन ॥६१॥

अपने दिल में बहुत ही प्यार भरे भाव लेकर चुस्ती के साथ अगरदास इस समय हाथ में शीशा पकड़कर खड़े रहते हैं ।

Nijanand App

तामें सामिल सीताराम, और गुल महम्मद ।
बंसी भी सेवा मिने, मन में धरे आनन्द ॥६२॥

इस सेवा में सीताराम, गुल मुहम्मद और बंसी भी मन में बहुत आनन्द लेकर शामिल रहते हैं ।

नित ल्यावे दरपन को, ए जो अगरदास ।
सिर पेंच बखत हाजिर करें, ए सेवे दिल खास ॥६३॥

पगड़ी बांधने के समय में प्रतिदिन शीशा लाने की अगरदास की खास सेवा होती है ।

केते दिन सेवा करी, ऊधो दास तिलक ।
पीछे लई छबीलदास ने, करें प्रेम सों हक ॥६४॥

कुछ दिन तक तिलक लगवाने की सेवा ऊधवदास जी करते हैं । फिर बाद में बड़े प्रेम भाव से अपने धनी को रिझाने के लिए ये सेवा छबील दास करते हैं ।

चन्द्रिका लटकें सिर पर, हीरा जोत अपार ।
चारों तरफों किरना उठें, तले मोती लटकत हार ॥६५॥

पगड़ी के सामने माथे के ऊपर चंद्रिका लटक रही है, उसमें लगे हीरे की रोशनी अपार शोभायमान है । हीरे की रोशनी की किरणें चारों तरफ झिल मिल कर रही हैं चन्द्रिका के नीचे मोतियों की सरें लटक रही हैं ।

बैठत चीरा बांध के, ऊका ल्याया कलंगी ।
हेतें हाथों बनावहीं, ये सेवा इनकी ॥६६॥

जब आप धाम के धनी पगड़ी बांधकर विराजमान होते हैं तो ऊका भाई फूलों की कलंगी बड़े प्यार से अपने हाथों से बना कर लाते हैं । ये सेवा इनकी होती है ।

फूलहार बनावत, रामदास धरमा ।
ढोला पहुंचावत हैं, बोले ललिता राज खंमा ॥६७॥

फूलमालाएं रामदास और धर्माबाई बनाती हैं और टोकरी में भरकर ढोला भाई ले आने की सेवा करते हैं । तब वहीं खड़ी ललिता बहन बड़े प्रेम से उच्चारण करती है - श्री राज, क्षमा ! श्री राज, क्षमा !

झोली मया राम की, सब फकीरी साज ।
गोदड़ी पेबंद की, ओढ़ावत हैं राज ॥६८॥

मैया राम झोली में फकीरी भेष का सब सामान रखते हैं । कपड़ों के टुकड़ों की बनी हुई गोदड़ी भी वह अपने पास रखते हैं । आवश्यकता पड़ने पर श्री जी को ओढ़ाने की सेवा इनकी होती है ।

Nijanand App

सुमरनी कपूर की, ल्याए के देवें हाथ ।
चिप्पी सेली मुतका, माला ल्यावें गोदरी साथ ॥६९॥

कपूर की बनी हुई छोटी माला मैया राम लाकर श्री जी की सेवा में हाजिर करता है । झोली में चिप्पी, सेली (बड़ी माला), मुतका (छड़ी) और गोदड़ी अपने साथ रखने की सेवा उनकी होती है ।

सुई तागा कोकड़ी, और केतेक सुए बड़े ।
अजमा सोंठ पीपर, मसाला गंधियान केते ॥७०॥

मैया राम की झोली में सुई धागा, धागे की रील और कुछ बड़े सूए, अजवाएन, सौंठ, पीपल, कई सुगंधियों के मसाले भी रहते हैं ।

काम पड़े मंगावत, बुलाओ मयाराम ।
झोली में से ल्याए के, हाज़िर करें तमाम ॥७१॥

जिस समय भी इन चीजों की जरूरत पड़ती है तो श्री जी कहते हैं, मैया राम को बुलाओ । वह तुरन्त वही सामान अपनी झोली में से निकाल कर हाजिर करते हैं ।

इत महाराजा आवत, पहनावत हैं सिनगार ।
पहिनावत बीटी बदले, दई अपने हाथ उतार ॥७२॥

इस समय महाराजा छत्रसाल जी आते हैं तो श्री जी को श्रृंगार कराने की सेवा इनकी होती है और अपने हाथ की अंगूठी उतार कर बदले में श्री जी को पहना देते हैं ।

भूखन श्री बाई जी ल्यावत, उमंग में दे चित्त ।
ए जो गोदावरी रूकमनी, संग आवत इत ॥७३॥

श्री बाई जी राज दिल में बहुत ही उमंग लेकर आभूषण ले आती हैं और गोदावरी, रूकमणि भी इस सेवा में उनके साथ हाजिर रहती हैं ।

रकेबी रूपे की, भर ल्यावत भूखन ।
रूमाल ढाँप के ल्यावत, महाराजा पहिनावत मोमिन ॥७४॥

चाँदी की रकेबी (प्लेट) में आभूषण भर कर रूमाल से ढाँप कर लाते हैं और महाराजा छत्रसाल जी भूषण पहनाने की सेवा करते हैं ।

Nijanand App

माला दो मोतिन की, जड़ाव मुंदरी कंचन ।
सोने की दो सांकली, दुगदुगी मानिक रोसन ॥७५॥

दो मोतियों की माला गले में पहनाई जाती हैं और दो सोने की, जिनमें लाल रंग का लॉकेट (दुगदुगी) चमक रहा है । सोने की मुन्दरी, जिसमें नग जड़े हैं, पहनाई जाती हैं ।

और सांकली दोहोरी, चंपकली नवसर ।
तापर कंठी बिराजत, तीन सरी ऊपर ॥७६॥

सोने की दोहरी जंजीर तथा चंपकली और नौ लड़ियों का हार (नवसरी) श्री जी के कंठ में शोभायमान होते हैं । इन हारों के ऊपर तीन लड़ियों वाली कंठी भी पहनाई जाती हैं ।

और कंठी मोतिन की, तले मानिक मोती लटकत ।
श्री राज कण्ठ विराजत, रोसन ज्यों झलकत ॥७७॥

मोतियों की कण्ठी के नीचे माणिक के मोती लटकते हैं । ऐसी कंठी श्री जी के सुंदर गले में पहनाई जाती है और इन मालाओं का तेज चारों तरफ चमक रहा है ।

पहनाए भूखन पीछे फिरें, श्री बाई जी अपने मंदिर ।
राज भोग अरूगावत, सेवा रसोई पर ॥७८॥

आभूषण पहनाने की सेवा करने के पश्चात् श्री बाई जी राज अपने मंदिर (कोठा मंदिर) में पधारते हैं । रसोई की सेवा में मग्न सुंदरसाथ श्री जी को समय पर आरोगाने की सेवा करते हैं ।

आई जी अरूगावने, ल्याई बाल भोग ।
रतन बाई मूंग ल्याई, आए पहुंची संजोग ॥७९॥

आई जी (श्री बाई जी की माता जी) श्री जी को आरोगाने के लिए बाल भोग लाती हैं । इतने में रतन बाई मूंग बना कर समय पर पहुंच जाती हैं ।

ले ले दौड़े और कोई, सो केती कहों बात ।
आरोगत हैं हेत सों, कोई प्रेम बरते कर बिख्यात ॥८०॥

बाल भोग (सुबह का नाश्ता) आरोगाने के समय और भी कई सुन्दर साथ सामान ले-ले कर आते हैं । बड़े प्रेम भाव के साथ श्री जी सबके लाड को पूरा करने के लिए आरोगते हैं ।

Nijanand App

इन समें छबीलदास, जल देवें कटोरा भर ।
बात पूछे कोई बीच में, ताको देत उत्तर ॥८१॥

आरोगते समय छबीलदास जल का कटोरा भर कर देते हैं । श्री जी से कोई प्रेम से बात करता है तो उसको भी उत्तर देते हैं ।

आसबाई अर्ज करे, पधारो घर मानिक ।
श्री राज रीझ के बोलत, आई बाई बुजरक ॥८२॥

इस समय लालदास जी हाजिर होकर प्रार्थना करते हैं कि अब आप मानिक भाई के घर पधारने की कृपा करें । श्री जी इनकी सेवाओं पर प्रसन्न होकर कहते हैं ! देखा, सरदार सखी आ गई ।

पनही जोड़े जड़ाव की, ल्याया बल्लभदास ।
छत्र सिर पर फेरत, ए मोमिन हैं खास ॥८३॥

रत्नों जड़ी खड़ाऊँ पहनाने की सेवा वल्लभदास जी करते हैं और सिर पर छत्र लेकर खड़े रहने और फेरने की इनकी खास सेवा होती है ।

पांव तले पांवड़ा, लालबाई बिछावत ।
और बिछावत किसनी, लेकर दिल में हित ॥८४॥

जब आप स्वामी जी चलते हैं तो मन में बहुत प्यार भरे भाव लेकर लालबाई और किशनी पांवड़ा बिछाने की सेवा करती हैं ।

उठत पलंग पर से, धनबाई लेवें हाथ ।
दूजी तरफ लालदास, सेवा हाथ पकड़ने खास ॥८५॥

धाम के दुल्हा जब पलंग से उठते हैं तो धनबाई आगे होकर हाथ पकड़ने की सेवा करती हैं । दूसरी तरफ हाथ पकड़ने की खास सेवा लालदास जी करते हैं ।

हाथ आसा गंगादास के, दूजी तरफ दास लाल ।
मकरन्द रहे सामिल, हाथ पकड़ने की चाल ॥८६॥

चलते समय एक ओर गंगादास जी हाथ में आसा (छड़ी) देते हैं । दूसरी तरफ श्री जी लाल दास जी के कंधे पर हाथ रखते हैं । हाथ पकड़ने की सेवा में मकरन्द भी शामिल होते हैं ।

जब महाराजा पहुंचहीं, उठावत पकड़ हाथ ।
लालदास बदले लालबाई, कोई समें पकड़ चलें हाथ ॥८७॥

जब महाराजा छत्रसाल जी पहुंच जाते हैं तो वह अपने हाथ से पकड़ कर उठाते हैं । किसी दिन लालदास के बदले लालबाई हाथ पकड़ कर चलती हैं ।

Nijanand App

हंसावत हैं राज को, जरा सेवा में।
आड़ी आए ठाढ़ी रहे, राज रीझे तिन से ॥८८॥

लालबाई चलते समय श्री जी के आगे थोड़ी देर आड़ी खड़ी होकर उनकी राह रोक कर उनको हंसा देती है। इनकी इस सेवा से श्री जी बहुत खुश होते हैं।

लटके मटके चलत, संग वानी गावनहार।
संग संकर दास के, और साथ सिरदार ॥८९॥

श्री जी आप धाम धनी लटकनी मटकनी चाल से चलते हैं तो शंकरदास जी के साथ और भी सुन्दरसाथ वाणी गाकर रिझाने की सेवा में हाजिर होते हैं।

मानिक मंदिर अपने, करें बिछौने जे।
चारों तरफों चन्द्रवा, और रखे गादी तकिए ए ॥९०॥

माणिक भाई पहले ही अपने घर में श्री जी के लिए बिछौने बिछाकर तैयार रखते हैं। गादी और तकिए से सजाकर ऊपर चन्द्रवा बांधने की सेंवा करते हैं।

सुआ को सेवा दई, अन्दर उतारन।
नित्याने हजूर रहे, करत अपने तन ॥९१॥

सुआ बाई श्री जी को अंदर ले जाकर विराजमान कराने की सेवा करती हैं। नित्य अपने हाथों से सेवा करके सुख लेती हैं।

जोड़े मंदिर गंगादास का, तहां बिछौने सब साज।
तहां राज बिराजत, सब पूरे मनोरथ काज ॥९२॥

माणिक भाई के घर के साथ ही गंगादास जी का घर है, वह भी अपने घर में श्री जी के लिए बिछौने बिछाने की सेवा करते हैं। आप श्री जी उसके भी भाव पूरे करने के लिए उसके घर पधारते हैं।

मोदी बड़ा बूलचन्द, चले राज संग ए।
ठौर पहुंचे बोलहीं, धाम धनी की जे ॥९३॥

बूलचन्द मोदी वृद्ध (बूढ़े) हैं पर श्री जी के साथ-साथ चलते हैं और श्री जी जब निश्चित स्थान पर पहुंचते हैं तो बूलचन्द जी "धाम धनी की जय" बुलाने की सेवा करते हैं।

Nijanand App

गौर बाई रहत है, हाथ उठावने सेवा में ।
हाथ पकड़ बैठावत, करे सेवा खुसाली में ॥९४॥

गौरबाई इस समय हाथ पकड़ कर बिठाने और उठाने की सेवा बड़े आनंद उमंग के साथ करती हैं।

पहिले मोरछल में, रहता था नंद राम ।
दूजी तरफ केसवदास, करत एही काम ॥९५॥

मोरछल झुलाने की सेवा में पहले नंदराम रहते थे और दूसरी तरफ केशवदास जी यही सेवा करते हैं।

यों करते मानिक के, घर से फिरे जब ।
मोरछल हाथ में लेए के, सेवा करे तब ॥९६॥

इस प्रकार जब माणिक भाई के घर से वापिस लौटते हैं तो उस समय भी हाथ में मोरछल लेकर झुलाने की सेवा होती है ।

और दूजा मोरछल, संकर लिए हाथ ।
और चौंरी जड़ाव की, लिए बल्लभदास के साथ ॥९७॥

दूसरी तरफ शंकर भाई चंवर लेकर झुलाने की सेवा करते हैं और वल्लभ दास जी नगों से जड़ी चंवर लेकर झुलाने की सेवा करते हैं ।

सामिल बल्लभ दास के, खुसाल बखतावर ।
हजूर हमेसा रहे, सेवा करे चित धर ॥९८॥

वल्लभदास जी के साथ चंवर ढुलाने की सेवा में खुशाल और बखतावर बड़े आनन्द के साथ सेवा में शामिल होते हैं ।

बल्लभ दास के सामिल, रहे महम्मद खान ।
मेहनत सेवा मिने, करे दिल में ले ईमान ॥९९॥

वल्लभ दास जी के साथ मुहम्मद खां बड़े परिश्रम और ईमान के साथ सेवा में शामिल रहते हैं ।

लटके मटके चलत, फेर बैठे पलंग आए ।
सामे मुरलीधर आसन किया, श्रवना देत बनाए ॥१००॥

लटकनी मटकनी चाल से चलकर आप श्री जी फिर श्री बंगला जी में आकर विराजमान हुए । इस समय एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुनने के लिए मुरलीदास बिल्कुल सामने आकर बैठ जाते हैं ।

Nijanand App

ऊपर पहर दिन के, आए मानिक के घर से ।
पधारत पलंग पर, हुआ चरचा समें ॥१०१॥

ठीक नौ बजे श्री जी माणिक भाई के घर से वापिस लौटते हैं और आ कर पलंग पर विराजमान होते हैं और उस समय अपने मुखारबिंद से चर्चा करते हैं ।

महामत कहे सुनों साथ जी, ए पोहोर एक की बिरत ।
जो होत है ता पर, सोए बताऊं जुगत ॥१०२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस तरह से सुंदरसाथ अपने धनी को रिझाने की सेवा करते हैं । पहले पहर में जो सेवा होती थी वो आपको बताई है । अब दूसरे पहर की सेवा किस प्रेम आनंद के साथ सुंदरसाथ करते थे, उसका वर्णन करता हूं ।

(प्रकरण ६३, चौपाई ३७४४)

दूसरा पहर

अब कहों दूसरे पहर की, सेवा साथ की जे ।
जिन भांत जो होत है, हक मेहर उतरी ए ॥१॥

अब दूसरे पहर ९ से १२ बजे तक के समय में किस प्रकार सुंदरसाथ सेवा करते हैं और श्री राज जी महाराज की मेहर भी सुंदरसाथ पर किस प्रकार उतरती है, वह आपको बताते हैं ।

दोऊ बाजू पलंग के, बैठत लाल केसवदास ।
फुरमान हदीसां पढ़न की, राज रिझावन आस ॥२॥

जिस पलंग पर आप श्री जी विराजमान हैं उसकी दोनों तरफ लालदास और केशवदास चर्चा के समय कुरान और हदीसों से प्रमाण देकर अपने धनी को रिझाने की चाह (आस) लेकर बैठते हैं ।

धनी धाम के देत हैं, निजधाम के निसान ।
लेवें मोमिन मिल के, अरस सुख सुभान ॥३॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के भेद बताते हुए परमधाम के २५ पक्षों का वर्णन सुनाते हैं । सब मोमिन मिल-बैठ कर अर्श की वाणी के सुख अपने धाम धनी की लीलाओं का वर्णन सुन कर लेते हैं ।

Nijanand App